जैन धर्म

प्र. 1. धर्म क्या है?

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि धर्म क्या होता है। धर्म की अनेक परिभाषाएँ हैं। किसी भी वस्तु के स्वभाव (Nature) को धर्म कहते हैं। जैसे पानी का स्वभाव शीतलता (Coldness) है, अग्नि का स्वभाव गर्मी है। इसी प्रकार हमें अपनी आत्मा के स्वभाव को जानना है, और आत्मा का स्वभाव है अन्नत ज्ञान (Infinite Knowledge), अन्नत दर्शन (Infinite Perception)।

2. धर्म की दूसरी परिभाषा हम इस प्रकार से कह सकते हैं कि यह एक दर्शन (Philosophy) है, और दुनिया में बहुत सारे दर्शन हैं, जैसे हिन्दु, सिख, यहुदी, बौद्ध, मुसलमान व जैन आदि और यह Philosophy हमें जीवन जीने की राह सिखाती है।

प्र. 2. जैन धर्म क्या है?

उ. जैन धर्म भी एक दर्शन (Philosophy) है, जिसका आचरण (Follow) करके हम अपनी आत्मा (Soul) के स्वभाव (Infinite Knowledge, Infinite Perception) को उजागर कर सकते हैं और उसमें रमण कर सकते हैं। और इसे ही हमने जैन धर्म कहा है।

वर्तमान समय में यह जैन दर्शन (धर्म) हमें भगवान ऋषभदेव से आरम्भ करते हुए भ. महावीर स्वामी ने हमें प्रदान किया है।

भगवान महावीर ने जैन धर्म के 3 सिद्धान्त (Principle) बताए हैं।

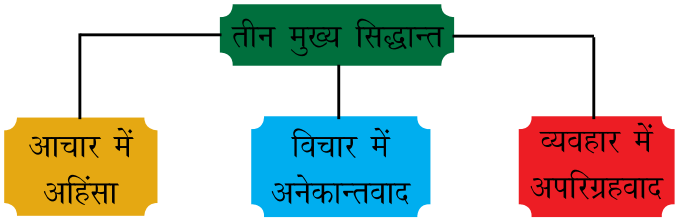

(1) आचार में अहिंसा (Following Non-Violence) (2) विचार में अनेकान्तवाद (Manysidedness in Thoughts) (3) व्यवहार में अपरिग्रहवाद (Practising Non Possessiveness)

प्र. 3. जैन शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई?

उ. जैन शब्द 'जिन' से बना है, यानि जो जिन को मानता हो वह जैन है। अब प्रश्न उठता है कि 'जिन' किसे कहते हैं? 'जिन' उसे कहते हैं, जिसने अपनी आत्मा के राग और द्वेष (Attachment & Hate) नामक बुराइयों (Evils) को जीत (Conqueor) लिया है। उन्हें हम अरिहंत भी कहते हैं।

धर्म और पाप

पिछले पाठों में हमने जाना कि धर्म किसे कहते हैं और जैन धर्म किसे कहते हैं। आज हम निम्नलिखित कुछ क्रियाओं (Actions) को जानेगें, जिनका पालन करना धर्म या धार्मिक क्रिया कहलाता है और उनके विपरीत (Opposite) चलना पाप या पाप क्रिया कहलाता है।

1. छोटे-बड़े सभी जीवों (Living Beings) की रक्षा करना
2. दुःखी जीवों पर दया करना (Show Kindness on All)
3. सत्य बोलना (Speaking True)
4. चोरी नही करना (Not to Steel)
5. मांस, अण्डा, शराब, Drugs, हुक्का आदि का सेवन नहीं करना
6. अपनी वस्तुओं में सन्तोष रखना
7. किसी भी साथी व अन्य से ईर्ष्या (Jeleous) नहीं करना
8. बड़ों की विनय (Respect) करना

तीर्थ और तीर्थंकर

प्र. तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ की स्थापना करने वाले को 'तीर्थंकर' कहते हैं। जैन धर्म के अनुसार हम उन्हें अरिहंत या जिनेश्वर भगवान भी कहते हैं।

प्र. तीर्थ किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ दो प्रकार के होते हैं। पहले हैं पवित्र स्थल जैसे बदरीनाथ, केदारनाथ, मानसरोवर आदि ये सब द्रव्य तीर्थ हैं।

दूसरे तीर्थ आध्यात्मिक हैं, ये 4 हैं– साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। इसे हम 'चतुर्विध संघ' भी कहते हैं।

प्र. जैन धर्म के अनुसार तीर्थंकर कितने हैं?

उ. वर्तमान काल के अनुसार 24 तीर्थंकर हैं और उनके नाम इस प्रकार हैं।

24 तीर्थंकर भगवानों के नाम

1. ऋषभदेव जी
2. अजितनाथ जी
3. संभवनाथ जी
4. अभिनन्दन जी
5. सुमति नाथ जी
6. पद्मप्रभ जी
7. सुपार्श्वनाथ जी
8. चंद्रप्रभ जी
9. सुविधिनाथ जी
10. शीतलनाथ जी
11. श्रेयांसनाथ जी
12. वासुपूज्य जी
13. विमलनाथ जी
14. अनन्तनाथ जी
15. धर्मनाथ जी
16. शान्तिनाथ जी
17. कुन्थुनाथ जी
18. अरनाथ जी
19. मल्लिनाथ जी
20. मुनिसुव्रत जी
21. नमिनाथ जी
22. अरिष्टनेमि जी
23. पार्श्वनाथ जी
24. महावीर स्वामी जी

सोलह सतियाँ

1.	ब्राह्मी	2.	सुन्दरी	3.	चन्दनाबाला
4.	राजीमति	5.	द्रोपदी	6.	कौशल्या
7.	मृगावती	8.	सुलसा	9.	सीता
10.	दमयंती	11.	शिवादेवी	12.	कुंती
13.	सुभद्रा	14.	पुष्पचूला	15.	प्रभावती
16.	पद्मावती				

20 विहरमान

1. श्री सीमंधर स्वामी जी
2. श्री युगमंदर स्वामी जी
3. श्री बाहु स्वामी जी
4. श्री सुबाहु स्वामी जी
5. श्री सुजात स्वामी जी
6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी जी
7. श्री ऋषभानन स्वामी जी
8. श्री अनन्तवीर्य स्वामी जी
9. श्री सूरप्रभ स्वामी जी
10. श्री विशालधर स्वामी जी
11. श्री व्रजधर स्वामी जी
12. श्री चन्द्रानन स्वामी जी
13. श्री भद्रबाहु स्वामी जी
14. श्री भुजंगम स्वामी जी
15. श्री ईश्वर स्वामी जी
16. श्री नेमिप्रभ स्वामी जी
17. श्री वीरसेन स्वामी जी
18. श्री महाभद्र स्वामी जी
19. श्री देवयश स्वामी जी
20. श्री अजितवीर्य स्वामी जी

ये 20 तीर्थंकर अभी महाविदेह क्षेत्र में विचर रहे हैं इसलिए इनको 'विहरमान' कहते हैं।

जैन साधु-साध्वी सम्प्रदाय

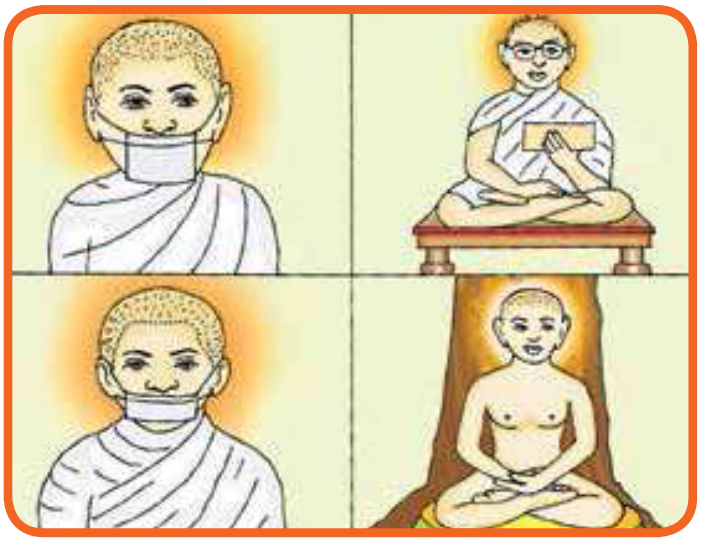

भ. महावीर ने उपदेश देकर धर्म संघ की स्थापना की। उस समय समाज व साधु वर्ग में जैन साधना पद्धति **(Way of Doing Dharm)** को लेकर कोई विशेष अन्तर नहीं था। भ. महावीर स्वामी के समय में साधु वर्ग सचेलक और अचेलक कहलाते थे। जो साधु वस्त्र धारण करते थे वे सचेलक और जो साधु वस्त्र धारण नहीं करते थे, वे अचेलक।

परन्तु धीरे-2 यह अन्तर (Difference) बढ़ता गया और आज के समय में जैन धर्म के अनुयायी श्रावकों व साधु-साध्वियों ने अपने आप को 4 भागों में विभाजित कर लिया है। अपितु मूलरूप से सिद्धान्तों में कोई अन्तर नहीं है, फिर भी बाह्यय (External) रूप में कुछ-2 Difference नजर आता है।

चार वर्गों के नाम इस प्रकर से हैंः–

1. श्वेताम्बर स्थानाकवासी सम्प्रदाय
2. श्वेताम्बर तेरापन्थी सम्प्रदाय
3. श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी सम्प्रदाय
4. दिगम्बर सम्प्रदाय

2016 की गणना के अनुसार चारों सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की संख्या क्रमशः 4002, 720, 9667 9619 है।

स्थानकवासी मुनियों के नियम

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कोई भी व्यक्ति जब जैन साधु या साध्वी बनता है तो पाँच महाव्रतों को ग्रहण करता है और उन्हें सम्पूर्ण जीवन निभाता है। यह 5 महाव्रतों का नियम चारों सम्प्रदाय के साधुओं (साध्वियों) पर लागू होता है और इन्हीं 5 महाव्रतों में जैन साधु की **आचार सहिंता (Code of Conduct)** आ जाती है। फिर भी इन महाव्रतों के पालन हेतु कुछ **उपनियम (Sub Rules) [समाचारी]**, चारों सम्प्रदायों के अपने-अपने हैं। अतः निम्न लिखित नियम स्थानकवासी साधु-साध्वियों के पालन हेतु बताए जा रहे हैं।

1. मुख पर श्वेत मुखवस्त्रिका लगाते हैं, श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और हाथ में रजोहरण रखते हैं।
2. नंगे पैर पैदल चलते हैं और दिन के समय ही चलते हैं।
3. गृहस्थों के घर से 42 दोष टालकर भोजन लेते हैं।
4. रात्री (During Sunset to Sunrise) में किसी भी प्रकार का आहार (Food), पानी (Water, Liquid) व दवाई (Medicine) आदि भी नहीं लेते हैं।
5. वर्ष में 1 या 2 बार सिर के बालों का हाथ से लोच करते हैं।
6. साधु स्त्री को व साध्वी पुरुष को स्पर्श नहीं करती (i.e. a Male Saint can't Touch any Female and a Female Saint can't Touch any Male irrespective of her or his Age)
7. भोजन हेतु लकड़ी के पात्रों का प्रयोग करते हैं।
8. T.V., Radio, Video, Mobile व Computer का प्रयोग नहीं करते हैं।
9. अपने पास किसी भी प्रकार की सम्पति (like: cash money, gold, silver, bank balance or any property) नहीं रखते हैं।

गति चार

सबसे पहले हमें जानना होगा कि संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं वो दो तरह की है (1) जीव (Living Being) और (2) अजीव (Non Living)

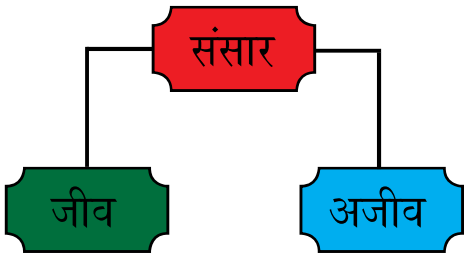

प्र. जीव (Living Being) किसे कहते हैं?

उ. जीव वह होता है, जिसमें Life होती है, जिसमें जानने की, सुख दुःख अनुभव करने की शक्ति हो, उसे जीव कहते हैं।

प्र. जीवों के मुख्य रूप से 2 प्रकार कौन से हैं?

हम पूरे ब्रह्मांड (Universe) में जीवों को 2 Category में बांट सकते हैं और पहले हैं शरीर धारी जीव Like मनुष्य, पशु, पक्षी आदि और 2nd category के जीव अशरीरी होते हैं जो कि सिद्ध कहलाते हैं और हम उन्हें देख नहीं सकते हैं।

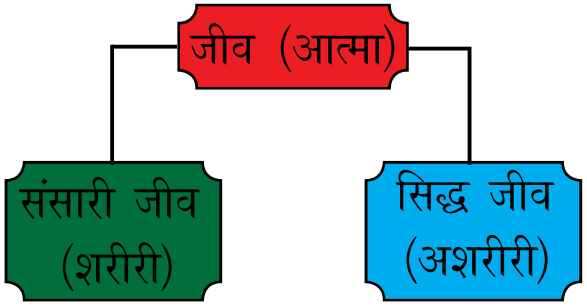

शरीरी जीव ही बार-2 जन्म मरण (Birth-Death-Birth) करते रहते हैं।

अब हमने शरीरी जीवों को वे जहां-जहां भी जन्म-मरण करते हैं, उनके आधार पर 4 Category में बांट दिया है।

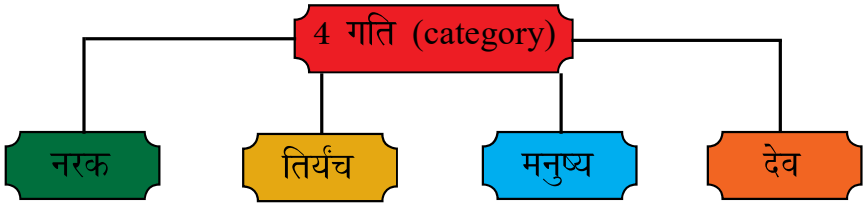

जैसे हम जब किसी पार्क में झूले झूलते हैं और उसमें कभी नीचे, कभी बीच में कभी ऊपर जाते रहते हैं, उसी प्रकार हम जैसे जीव इन 4 गतियों में चक्कर काटते रहते हैं। यानि कभी हम मनुष्य बनते हैं, कभी मनुष्य से नरक, तिर्यंच या देव बनते रहते हैं, जब तक हम अशरीरी जीव नहीं बन जाते हैं। अब हम इन 4 गतियों के बारे में जानेगें।

1. नरक गतिः यह स्थान जैन धर्म के Universe Map के अनुसार अधो भाग (Lower Part of Universe) में है यहां पर जन्म लेने वाले जीव नरक गति के जीव कहलाते हैं। उन्हें हम नारकी भी कहते हैं। नारकी जीव भी 7 Category के होते हैं, यानि पहले नरक से लेकर 7वीं नरक तक के जीव। हम उन्हें देख नहीं सकते हैं।

2. तिर्यंच गतिः यह स्थान लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में स्थित है। पशु, पक्षी, कीट, जानवर, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा वनस्पति आदि के जीव त्रिर्यंच गति के जीव कहलाते हैं।

3. मनुष्य गतिः यह स्थान भी लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में ही है। हम सब मानव (Human Being) मनुष्य गति के जीव कहलाते हैं।

4. देव गतिः यह स्थान लोक के ऊर्ध्वभाग (Upper Part of Universe) में है। इस गति में जन्म लेने वाले जीव देव या देवता कहलाते हैं। इन की 26 Categories हैं। यानि जीव पहले देवलोक से लेकर 26वें देवलोक तक जन्म ले सकता है।

इन्द्रियाँ पाँच

[Five Senses]

जिन साधनों या अगों के द्वारा हमारी आत्मा कुछ ज्ञान प्राप्त करती है उन्हें हम इन्द्रियाँ कहते हैं। (Through which Organs, Our Soul get some Knowledge are called Senses)

1. **स्पर्शन इन्द्रिय** (Touch Sense): इस से जीव को पदार्थो के शीत (Cold), उष्ण (Hot), हल्का (Light), भारी (Heavy) आदि स्पर्शों का ज्ञान होता है। इसे त्वचा (Skin) भी कहते हैं। इसमें हमारे शरीर के सभी अंग हाथ पैर आदि आ जाते हैं।

2. **रसना इन्द्रिय** (Tounge Sense): इस से जीव को खट्टे-मीठे, कड़वा चरचरा आदि रसों का ज्ञान होता है। इसे जिह्वा भी कहते हैं।

3. **घ्राण इन्द्रिय** (Nose Sense): इस से जीव को अच्छी या बुरी गंध का ज्ञान होता है। इसे नाक भी कहते हैं।

4. **चक्षु इन्द्रिय** (Eyes Sense): इस से जीव को काले, नीले, पीले आदि रंगों का ज्ञान होता है। आँखों से हम देखते हैं, पढ़ते हैं।

5. **श्रोत्र इन्द्रिय** (Ears Sense): इसे कान भी कहते हैं। इससे शब्दों का ज्ञान होता है। हम कान से सुनते हैं। हमें किसी की निंदा नहीं सुननी चाहिए। हमें अच्छी बातें सुननी चाहिए।

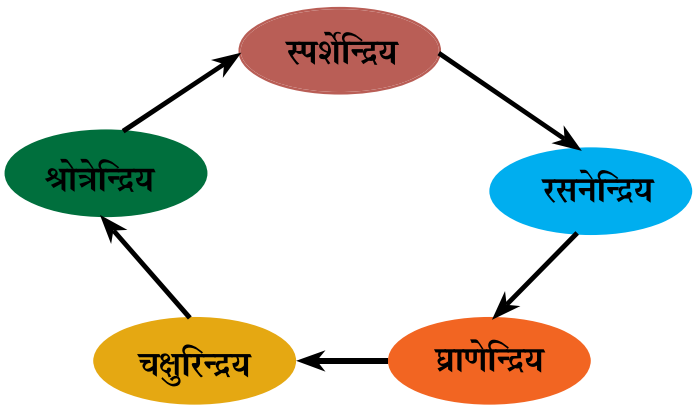

जाति पाँच
[Five Categories of Jiv]

इस लोक के जीवों के इन्द्रियों के अनुसार वर्गीकरण को जाति कहते हैं।

हमने पहले आपको बताया है कि यह आत्मा 5 इन्द्रियों (Skin, Tounge, Nose, Eyes, Ears) के द्वारा ज्ञान प्राप्त करती है और जब तक यह मुक्त (Liberated) नहीं होती, कोई-न कोई शरीर धारण करती है और शरीर धारण करते समय यह आत्मा कभी एक इन्द्रिय (Sense) वाला शरीर ग्रहण करती है, कभी दो, कभी तीन, कभी चार और कभी पाँच इन्द्रिय शरीर धारण करती है। अतः हमनें ऐसे जीवों के समूह (Group) जिनके सिर्फ एक (Sense) है, उसे एकेन्द्रिय जीव कह दिया है और 5 इन्द्रिय वाले जीव को पंचेन्द्रिय जीव कहा है। उदाहरणतः

एकेन्द्रिय (Skin) जीव: पानी, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी, वायु आदि

बेइन्द्रिय (Skin & Tongue) जीव: लट, केंचुआ आदि

तेइन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose) जीव: चींटी, खटमल आदि

चउन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes) जीव: मक्खी, मच्छर आदि

पंचेन्द्रिय (skin, tongue, nose, eyes, ears): मनुष्य, पशु, पक्षी, देवता

सामायिक

हमने प्रथम पाठ नवकार मंत्र में जाना कि अरिहंत कौन होते हैं और सिद्ध कौन होते हैं। हमने जाना कि 8 कर्मों के कारण हमारे शरीर और आत्मा का सम्बन्ध बना रहता है। और जब तक ये 8 कर्म आत्मा के साथ रहेगें तब तक हम जन्म मरण के दुःख भोगते रहेंगे। अगर हमें हमेशा-2 के लिए सुखी होना है तो हमें इन 8 कर्मों से छुटकारा पाना होगा। वैसे तो बहुत-सारे माध्यम (Medium) हो सकते हैं इन कर्मों से छुटकारा पाने के, परन्तु फिर भी हमारे जैन गुरुओं ने हमें एक क्रिया (विधि) बताई है, जिसे अपना कर हम 8 कर्मों से छुटकारा पा सकते हैं और उस क्रिया का नाम है– **सामायिक** यानि समभाव में रहना। अब हम जानगें कि सामायिक कैसे की जाती है।

सामायिक का अर्थ होता है कि समता धारण करना, यानि इस प्रकार का अभ्यास (Exercise) करें कि हमें किसी भी वस्तु या जीव पर न राग (Attachment) रहे और न ही घृणा (Hate)। सामायिक में हम एक स्थान पर 48 मिनट के लिए आसन, मुँहपति, पूंजनी आदि लेकर एवं चोलपट्टा आदि पहनकर स्थानक या घर में एकान्त स्थान पर बैठ जाते हैं। सामायिक करते समय, पैंट, पाजामा, Shirt इत्यादि सभी कपड़े उतारकर, सफेद दुपट्टा आदि लेना चाहिए।

हमें सामायिक 32 दोष टालकर करनी चाहिए। 32 दोषों का वर्णन हम अगली पुस्तक में करेंगे। सामायिक में हमें अपनी गल्तियों को भी निहारना चाहिए। हमें सामायिक में अपने शास्त्रों (आगमों) को भी पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए।

सामायिक विधि सहित करने के लिए सामायिक के 9 सूत्रों को याद करके उनके उच्चारण सहित (मन ही मन में) करनी चाहिए। यहां पर हम सिर्फ सामायिक के पाठों के नाम दे रहे हैं। सम्पूर्ण रूप से आप किसी भी आनुपूर्वी की पुस्तक या

संस्कार शिविर की तीनों भागों की पुस्तकों से जान सकते हैं।

सामायिक के पाठों के नाम इस प्रकार हैं।

(1) नवकार-सूत्र, (2) गुरु-वन्दन-सूत्र (3) सम्यक्त्व-सूत्र (4) आलोचना-सूत्र (5) कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा-सूत्र (6) चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र (7) प्रणिपात-सूत्र (या शक्रस्तव-सूत्र) (8) सामायिक लेने का पाठ (9) सामायिक पारने का पाठ।

प्र. सामायिक के उपकरण कौन-कौन से हैं?

उ. (1) आसन, (2) मुँहपत्ति, (3) पूंजनी, (4) रजोहरण, (5) माला, (6) पुस्तक, (7) ठवणी, (8) खेस, (9) चोलपट्टा।

इन सब के अतिरिक्त आनुपूर्वी व धार्मिक पुस्तकों का उपयोग करना चाहिए।

प्र. सामायिक करने से क्या लाभ हैं?

उ. (1) समभाव की प्राप्ति होती है। (2) अट्ठारह पाप छूटते हैं। (3) दो घड़ी साधु जैसा जीवन बीतता है। (4) जीवों की दया और रक्षा की भावना बढ़ती है और दृढ़ बनती है। (5) सामायिक करने से जिनवाणी सुनने, पढ़ने और समझने का अवसर मिलता है।